

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
7. पाँच अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

खण्ड - क

[अपठित अंश]

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

[10]

डॉ. भीम राव अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के एक छोटे से गाँव में हुआ था। डॉ. भीम राव अंबेडकर के पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल और माता का भीमाबाई था। अंबेडकर जी अपने माता-पिता की आखिरी संतान थे। भीमराव अंबेडकर का जन्म महार जाति में हुआ था जिसे लोग अछूत और बेहद निचला वर्ग मानते थे। छोटी जाति से होने की वजह से समाज की उपेक्षा का सामना करना पड़ा लेकिन मजबूत इरादों के बल पर उन्होंने देश को एक ऐसा रास्ता दिखाया जिसकी वजह से उन्हें आज

भी याद किया जाता है। भीम राव अंबेडकर एक नेता, वकील, गरीबों के मसीहा और देश के बहुत बड़े नेता थे जिन्होंने समाज की बेड़ियाँ तोड़ कर विकास के लिए कार्य किए। अपने अथक परिश्रम से एम एस सी, डी एस सी। तथा बैरिस्ट्री की डिग्री प्राप्त कर लंदन से भारत लौटे। 1923 में बम्बई उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की अनेक कठिनाईयों के बावजूद अपने कार्य में निरंतर आगे बढ़ते रहे। एक मुकदमे में उन्होंने अपने ठोस तर्कों से अभियुक्त को फांसी की सजा से मुक्त करा दिया था। उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने निचली अदालत के फैसले को रद्द कर जाने वाले अंबेडकर जी कुछ ही समय में देश की एक चर्चित हस्ती बन चुके थे। 6 दिसंबर 1956 को अंबेडकर जी की मृत्यु हो गई।

(क) डॉ. भीम राव अंबेडकर का जन्म कब और कहाँ हुआ था? [2]

उत्तर : डॉ. भीम राव अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के एक छोटे से गाँव में हुआ था।

(ख) डॉ. भीम राव अंबेडकर का जन्म कौन-सी जाति में हुआ था? उसका समाज में क्या स्थान था? [2]

उत्तर : भीमराव अंबेडकर का जन्म महार जाति में हुआ था जिसे लोग अछूत और बेहद निचला वर्ग मानते थे।

(ग) डॉ. भीम राव अंबेडकर अथक परिश्रम से कौन-कौन-सी डिग्री प्राप्त की थी? [2]

उत्तर : अपने अथक परिश्रम से एम एस सी, डी एस सी तथा बैरिस्ट्री की डिग्री प्राप्त कर लंदन से भारत लौटे।

(घ) डॉ. भीम राव अंबेडकर एक चर्चित हस्ती कैसे बने? [2]

उत्तर : एक मुकदमे में उन्होंने अपने ठोस तर्कों से अभियुक्त को फांसी की सजा से मुक्त करा दिया था। उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने निचली अदालत के फैसले को रद्द कर जाने वाले अंबेडकर जी कुछ ही समय में देश की एक चर्चित हस्ती बन चुके थे।

(ङ) डॉ. भीम राव अंबेडकर कौन थे? [1]

उत्तर : भीम राव अंबेडकर एक नेता, वकील, गरीबों के मसीहा और देश के बहुत बड़े नेता थे।

(च) उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें। [1]

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक 'डॉ. भीम राव अंबेडकर' है।

खण्ड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र.2. शब्द पद के रूप में कब बदल जाता है? [1]

उत्तर : जब कोई शब्द 'वाक्य में प्रयुक्त होता है तो उसे शब्द न कहकर पद कहा जाता है।

प्र.3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए। [3]

(क) मेरे कमरे में एक पुरानी घड़ी है। (मिश्र वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)

उत्तर : मेरे कमरे में जो घड़ी है, वह पुरानी है।

(ख) दोपहर होते-होते हम इलाहाबाद पहुँचे। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : दोपहर हुई और हम इलाहाबाद पहुँचे।

(ग) जो लोग मेहनती होते हैं, वे उन्नति करते हैं। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : मेहनती लोग उन्नति करते हैं।

प्र.4. (क) निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए। [2]

- आजीवन
- त्रिवेणी

समस्त पद	विग्रह	समास
आजीवन	जीवन भर	अव्ययीभाव समास
त्रिवेणी	तीन वेणियों का समूह	द्विगु समास

(ख) निम्नलिखित विग्रहों का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए। [2]

- राजा का पुत्र
- नीला है कंठ जिसका (शिव)

विग्रह	समस्त पद	समास
राजा का पुत्र	राजपुत्र	तत्पुरुष समास
नीला है कंठ जिसका (शिव)	नीलकंठ	बहुव्रीहि समास

प्र.5. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप में लिखिए।

[4]

(क) जितनी करनी वैसी भरनी।

उत्तर : जैसी करनी वैसी भरनी।

(ख) मोर के पास सुंदर पंख होते हैं।

उत्तर : मोर के सुंदर पंख होते हैं।

(ग) मेरा लक्ष्य केवल विद्या-प्राप्ति होगी।

उत्तर : मेरा लक्ष्य केवल विद्या-प्राप्ति होगा।

(घ) आपको यह मिठाई कैसा लगा?

उत्तर : आपको यह मिठाई कैसी लगी?

प्र.6. उचित मुहावरों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें [4]

- बड़े भाई की नई गाड़ी देखकर छोटे भाई की छाती पर साँप लोटने लगे।
- जब से वह कक्षा में प्रथम आया है तब से उसके पाँव जमीन पर नहीं पड़ते।
- शर्माजी जब ईमानदार राम को अपने गलत इरादों में फँसा न सके तो अपना सा मुँह लेकर रह गए।
- उधार लेने के कारण रोहन के सिर पर हमेशा साहूकार की नंगी तलवार लटकती रहती है।

खण्ड - ग

[पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक]

प्र.7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए: [2+2+2=6]

(क) 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गई?

उत्तर : 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए

कलकत्तावासियों ने अनेक तैयारियाँ की थी जैसे लोगों ने अपने

मकानों को खूब सजाया था, शहर के प्रत्येक भाग में राष्ट्रीय झंडे लगाए गए थे, कुछ लोगों ने तो अपने घर और मकानों को ऐसे सजाया था जैसे स्वतंत्रता प्राप्त ही हो गई हो।

(ख) शेख अयाज के पिता अपने बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़ कर क्यों उठ खड़े हुए?

उत्तर : शेख अयाज के पिता अपने बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़ कर उस च्योंटे को कुएँ पर छोड़ने के लिए उठ खड़े हुए क्योंकि उनके अनुसार उन्होंने उस च्योंटे को घर से बेघर कर दिया था अतः बिना समय गवाँए वे उस च्योंटे को उसके घर अर्थात् कुएँ पर छोड़ आते हैं।

(ग) शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है?

उत्तर : शुद्ध सोने में किसी प्रकार की मिलावट नहीं की जा सकती। ताँबे से सोना मजबूत हो जाता है परन्तु शुद्धता समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार व्यावहारिकता में शुद्ध आदर्श समाप्त हो जाते हैं। परन्तु जीवन में आदर्श के साथ व्यावहारिकता भी आवश्यक है, क्योंकि व्यावहारिकता के समावेश से आदर्श सुंदर व मजबूत हो जाते हैं।

(घ) निकोबार के लोग तताँरा को क्यों पसंद करते थे?

उत्तर : तताँरा एक नेक, मददगार युवक था। वह सदैव दूसरों की सहायता करने के लिए तत्पर रहता था। अपने नहीं बल्कि समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना चाहता था। जहाँ कहीं भी मुसीबत

आती वह दौड़ा-दौड़ा चला जाता था। उसके इन्हीं मानवीय गुणों के कारण निकोबार के लोग ततौरा को पसंद करते थे।

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। [5]

1. अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ का लेखक "मिट्टी मिले खो के सभी निशान" - उक्ति के माध्यम से क्या कहना चाहता है? उदहारण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इन उक्ति के द्वारा लेखक यह कहना चाहता है कि सभी प्राणी और मनुष्य की नजरों में एक है। सभी को बनानेवाला वह एक ही ईश्वर है अतः वह किसी में कोई भेदभाव नहीं करता है। सभी प्राणी धरती में जन्म लेते हैं और इसी धरती में विलीन भी हो जाते हैं।

अथवा

2. 'अहंकार मनुष्य का विनाश करता है' - इस कथन को स्पष्ट करने के लिए बड़े भाई साहब ने क्या-क्या उदहारण दिए? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर : अहंकार मनुष्य का विनाश करता है - इस कथन को स्पष्ट करने के लिए बड़े भाई साहब ने रावण, शैतान, शाहेरूम का उदाहरण दिया है।

रावण चक्रवर्ती राजा था। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। यहाँ तक की आग और पानी भी उसके दास थे। मगर उसका क्या अंत हुआ घमंड ने उसका नामोनिशान तक मिटा डाला। भूमंडल के स्वामी को मरते समय चुल्लू में पानी देने वाला भी नहीं बचा था।

शैतान को भी इस बात का घमंड हो गया कि ईश्वर का उससे बढ़कर कोई भक्त नहीं इसका नतीजा क्या निकला ईश्वर ने उसे स्वर्ग से नरक में धकेल दिया।

उसी प्रकार शाहेरूम ने भी एक बार अंहकार किया था इसलिए वह भीख माँग-माँगकर मर गया।

अतः बड़े भाई साहब छोटे भाई को यही समझा रहे थे कि बिना परिश्रम किये एक बार परीक्षा में पाई गई सफलता मानो जैसी अंधे के हाथ में बटेर लगने जैसी है। परंतु बटेर एक बार हाथ लग सकती है बार-बार नहीं इसलिए छोटा भाई परिश्रम और मेहनत से मुँह न चुराए।

प्र. 19. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए। [2+2+2=6]

(क) दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : मीरा, श्रीकृष्ण को सर्वस्व समर्पित कर चुकी हैं। वे कृष्ण की दासी बनकर उनके दर्शन का सुख पा सकेगी और उनके समीप रह पाएगी। इस प्रकार मीरा दासी बनकर श्रीकृष्ण के दर्शन, नाम स्मरण रूपी जेब-खर्च और भक्ति रूपी जागीर तीनों प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनाना चाहती हैं।

(ख) विरासत में मिली चीजों की बड़ी संभाल क्यों होती है स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : विरासत में मिली चीजों की बड़ी सँभाल इसलिए होती है क्योंकि वे हमारे पूर्वजों व बीते समय की होती है। इनसे हमारा भावनात्मक संबंध होता है। इसलिए इन्हें अमूल्य माना जाता है। ये तात्कालिक परिस्थितियों की जानकारी के

साथ दिशानिर्देश भी देती हैं। इसलिए इन्हें सँभाल कर रखा जाता है ताकि हमारे बच्चों के भविष्य-निर्माण का आधार मजबूत बन सके।

(ग) 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने देशवासियों से क्या अपेक्षाएँ रखी हैं?

उत्तर : 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने देशवासियों से अपना सर्वस्व न्योछावर करने की अपेक्षाएँ रखी हैं।

(घ) छाया भी कब छाया ढूँढने लगती है?

उत्तर : ग्रीष्म के जेठ मास की दोपहर में धूप इतनी तेज होती है कि सिर पर आने लगती है जिससे वस्तुओं की छाया छोटी होती जाती है। इसलिए कवि का कहना है कि जेठ की दुपहरी की भीषण गर्मी में छाया भी त्रस्त होकर छाया ढूँढने लगती है।

प्र.10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। [5]

1. पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : वर्षा ऋतु में पर्वतीय प्रदेश में प्रकृति प्रतिपल नया वेश ग्रहण करती दिखाई देती है। इस ऋतु में प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन आते हैं -

- बादलों की ओट में छिपे पर्वत मानों पंख लगाकर कहीं उड़ गए हों तथा तालाबों में से उठता हुआ कोहरा धुँएँ की भाँति प्रतीत होता है।

- पर्वतों से बहते हुए झरने मोतियों की लड़ियों से प्रतीत होते हैं।
- पर्वत पर असंख्य फूल खिल जाते हैं।
- ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर एकटक देखते हैं।
- बादलों के छा जाने से पर्वत अदृश्य हो जाता है।
- ताल से उठते हुए धुँएँ को देखकर लगता है, मानो आग लग गई हो।
- आकाश में तेजी से इधर-उधर घूमते हुए बादल, अत्यंत आकर्षक लगते हैं।

अथवा

2. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कबीर के अनुसार जो व्यक्ति केवल सांसारिक सुखों में डूबा रहता है और जिसके जीवन का उद्देश्य केवल खाना, पीना और सोना है। वही व्यक्ति सुखी है। कवि के अनुसार 'सोना' अज्ञानता का प्रतीक है और 'जागना' ज्ञान का प्रतीक है। जो लोग सांसारिक सुखों में खोए रहते हैं, जीवन के भौतिक सुखों में लिप्त रहते हैं वे सोए हुए हैं और जो सांसारिक सुखों को व्यर्थ समझते हैं, अपने को ईश्वर के प्रति समर्पित करते हैं वे ही जागते हैं। ज्ञानी व्यक्ति जानता है कि संसार नश्वर है फिर भी मनुष्य इसमें डूबा हुआ है। यह देखकर वह दुखी हो जाता है। वे संसार की दुर्दशा को दूर करने के लिए चिंतित रहते हैं, सोते नहीं हैं अर्थात् जाग्रत अवस्था में रहते हैं।

1. टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए।

उत्तर : टोपी हिंदू धर्म का था और इफ़्फ़न की दादी मुस्लिम। परंतु जब भी टोपी इफ़्फ़न के घर जाता दादी के पास ही बैठता। उनकी मीठी पूरबी बोली उसे बहुत अच्छी लगती थी। दादी पहले अम्मा का हाल चाल पूछतीं। दादी उसे रोज़ कुछ न कुछ खाने को देती परन्तु टोपी खाता नहीं था।

अतः दोनों का रिश्ता जाति और धर्म से परे प्यार के धागे से बँधा था। यहाँ पर लेखक ने यह समझाने का प्रयास किया है कि जब रिश्ते प्रेम से बँधे होते हैं तो तब धर्म, मजहब सभी बेमानी हो जाते हैं।

2. 'हरिहर काका'पाठ के आलोक में बताइए कि संयुक्त परिवार में सुखपूर्वक रहने के लिए आप किन-किन जीवन मूल्यों को आवश्यक मानते हैं और क्यों?

उत्तर : संयुक्त परिवार में रहने के लिए आपसी समझ, छोटे-बड़ों का आदर, प्रेम, निस्वार्थता आदि ऐसे अनेकों मूल्य हैं जिसके कारण संयुक्त परिवार में सुखपूर्वक रहा जा सकता है। घर के छोटे बड़े सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार से परिवार के सदस्य एक-दूसरे का साथ विपरीत परिस्थितियों में भी निभाते हैं। संयुक्त परिवारों में लोभ और लालच जैसे नकारात्मक मूल्य नहीं होने चाहिए। हरिहर काका के जीवन में भी जब उनके घरवालों के जीवन में इस लालच ने प्रवेश किया तब ही उनके बुरे दिन शुरू

हुए। परिवार के सदस्यों को जब यह महसूस होने लगा कि काका की संपत्ति अब उनके हाथ से निकल जाएगी तो सभी का व्यवहार उनकी तरफ से बदल गया और काका अकेले रहने पर मजबूर हो गए।

खण्ड - घ

[लेखन]

प्र.12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

[6]

नारी

भारत में नारियों को हर दृष्टि से पूज्य माना जाता रहा है-

‘नारी तू नारायणी’ कहा जाता है।

संस्कृत में एक श्लोक है - 'यस्य पूज्यन्ते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताः (भावार्थ - जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।)

इतिहास के कुछ अंधकारमय कालखण्ड को छोड़कर सदा ही नारी के शिक्षा एवं संस्कार को महत्त्व प्रदान किया गया।

भारत में 19वीं शताब्दी में प्रायः सभी शैक्षिक संस्थाएँ जनता में नेतृत्व करनेवाले व्यक्तियों द्वारा संचालित थीं। इनमें कुछ अँग्रेज व्यक्ति भी थे। उस समय राजा राममोहन राय ने बाल विवाह तथा सती की प्रथा को दूर करने का अथक परिश्रम किया। इन कुप्रथाओं के दूर होने से नारी शिक्षा को प्रोत्साहन मिला। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने बंगाल में कई स्कूल लड़कियों की शिक्षा के लिए खोले।

पहले स्त्री को अबला माना जाता था। परन्तु आज की नारी अबला नहीं।

बीते समय में स्त्री का घर से निकलकर नौकरी करना बहुत बुरा माना जाता था। उसे घर में रखी वस्तु के समान ही समझा जाता है। लेकिन जबसे वह शिक्षित हुई है, उसने इस धारणा के खण्ड-खण्ड कर दिया हैं।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में समाज में आर्थिक सामाजिक बदलाव आए तब नारी के लिए भी नौकरी और शिक्षा के अवसर कंप्यूटर, मिडिया, पत्रकारिता, सेना, डाक्टर, विज्ञान आदि जगह पर भी अपना सिक्का जमा लिया अब नारी की दुनिया बदल रही है हर क्षेत्र में उसकी योग्यता को सराहा जाता है। नौकरी के साथ आज वह अपना परिवार भी बहुत अच्छी तरह से संभाल रही है। वह एक माँ भी है, पत्नी भी, प्रेमिका भी पर आज उसका अपना कैरियर भी है वह अब खुले आकाश में अपनी उड़ान भरना चाहती है।

मेरी प्रिय हिंदी कवयित्री

हिंदी काव्य साहित्य अत्यंत विशाल एवं समृद्ध है। अनेक कवियों ने अपनी सुंदर रचना से हिंदी कव्योद्यान को पुष्पित और पल्लवित किया है। इन कवि रत्नों में किसी को अपना प्रिय बताना बड़ा कठिन है। फिर भी जहाँ तक चुनाव का प्रश्न है, मेरी प्रिय कवियत्री महादेवी वर्मा हैं।

श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म फरुखाबाद में सन 1907 में हुआ था। आपने अपनी आरंभिक शिक्षा इंदौर में पाई। महादेवी जी का कार्यक्षेत्र लेखन, संपादन और अध्यापन रहा। महादेवीजी को साहित्य का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ प्राप्त हुआ है। महादेवी वर्मा श्रेष्ठ कवयित्री और लेखक ही नहीं थीं, वे एक संवेदनशील महिला भी थीं। उनमें ममता, करुणा, निष्ठा, श्रद्धा, भावुकता, देशप्रेम तथा निर्भयता आदि गुण कूट-कूट कर भरे हुए थे। भाषा पर महादेवी का पूर्ण अधिकार था। महादेवी ने गद्य और पद्य में अनेक रचनाएँ की हैं। नीहार, नीरजा, रश्मि, सांध्य, गीत, यामा, दीपशिखा आदि काव्यग्रंथों की महादेवी जी ने रचना की है। दूसरी ओर अतीत के चलचित्र, श्रृंखला कड़ियाँ, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी आदि कृतियों में महादेवी जी ने जीवन की यथार्थ पीड़ाओं एवं कमियों को देखा है।

आधुनिक युग की मीरा के नाम से प्रसिद्ध श्रीमती महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व पर विचार करते हुए श्री राजेन्द्र सिंह गौड़ लिखते हैं, उनके जीवन में वेदना भी है, रुदन भी है। इन दोनों के समन्वय में ही उनके व्यक्तित्व की विशेषता है। वास्तव में महादेवी जी के जीवन और साहित्य में करुणा, वेदना तथा विरह की वह अभूतपूर्व त्रिवेणी उत्पन्न हुई है जिससे समस्त हिंदी साहित्य उसकी सरसता से ओतप्रोत है।

खड़ी बोली में कोमल, सुन्दर, कल्पना-प्रधान एवं चिंतन की प्रेरणा देने वाले साहित्य की सृष्टि के कारण इनका हिन्दी साहित्य में अन्यतम स्थान माना जाता है।

प्रकृति

मनुष्य प्रकृति से सदा से जुड़ा हुआ है। प्रकृति परमात्मा की अनुपम कृति है। प्रकृति का पल-पल परिवर्तित रूप उल्लासमय है, हृदयाकर्षक है। वह सर्वस्व लुटाकर भी हँसती रहती है। प्रकृति अपने हजार रूपों में हमारे सामने खुशियों का खजाना लाती है। प्रकृति हमें सिखाती है कि जीवन हरपल आनंद से सराबोर है। नदियों का कल कल करता संगीत, झूमते गाते पेड़, एवं छोटे छोटे जीव हमें सिखाते हैं कि जीवन को ऐसे जियो की जीवन का हर पल खुशियों की सौगात बन जाए। प्रकृति की गोद में वो सुख है, जो हजारों की संपत्ति पाकर भी नहीं मिलता। इसके सानिध्य में रहकर मनुष्य जीने की प्रेरणा पाता है।

प्र.13. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 80-100 शब्दों में पत्र लेखन कीजिए।

[5]

1. अपने क्षेत्र के पोस्टमास्टर को ठीक से डाक वितरण न होने की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए पत्र लिखिए।

अमर कौशिक

मकान नं. 10

नकुलविहार

नई दिल्ली - 110 035

दिनांक : 18 जुलाई 20XX

सेवा में,

मुख्य डाकपाल

मुख्य डाकघर

कश्मीरी गेट

नई दिल्ली - 110 006

विषय : डाक की उचित व्यवस्था के लिए आग्रह

माननीय महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र, नकुल विहार, में डाक-वितरण की अवस्था की ओर दिलाना चाहता हूँ। आपके क्षेत्र में डाक-वितरण की व्यवस्था नितान्त शोचनीय है। कुछ दिनों से हमारी डाक समय पर नहीं मिल रही है। साधारण पत्र दो सप्ताह के बाद प्राप्त होते हैं। कई बार पता सही और स्पष्ट लिखा होने के बावजूद पत्र गलत जगह पड़े हुए मिले हैं।

आशा है कि आप शीघ्र उपर्युक्त बातों पर ध्यान देकर उचित कार्यवाही करें ताकि डाकिया फिर ऐसी लापरवाही न करें।

सधन्यवाद

भवदीय

अमर कौशिक

अथवा

2. आपकी चचेरी बहन जो गाँव में रहती है, उसकी दसवीं के बाद शिक्षा रोक दी गई है। उसकी आगे की पढ़ाई जारी रखने का निवेदन करते हुए अपने चाचाजी को पत्र लिखिए, जिसमें नारी शिक्षा की आवश्यकता और लाभों की भी चर्चा कीजिए।

102, मोहनगंज

गली नं- 3

कानपुर

दिनांक: 27 जून 2015

आदरणीय चाचाजी

सादर चरण स्पर्श।

चाचीजी का पत्र मिला बता रही थी कि बहन मंगला ने दसवीं की परीक्षा अच्छे अंकों से पास कर ली है। यह सुनकर मन अत्यंत प्रसन्न हो उठा पर दूसरी ओर जैसे ही यह पता चला कि आपने उसे आगे की पढ़ाई के लिए आपने मना कर दिया है और मन दुखी हो उठा। क्यों, चाचाजी आपने बहन मंगला के प्रति ऐसा निर्णय कैसे ले लिया? आपको पता ही है कि मंगला एक होनहार छात्रा होने के साथ घर और बाहर के सभी कामों में निपुण है। चाचाजी हम 21 सदी में पहुँच गए जहाँ लड़का और लड़की एक समान है। आज ऐसा कौन-सा कार्य है जो लड़की नहीं कर सकती है। आपको तो पता ही है चाचाजी एक नारी के शिक्षित होने से पूरा एक समाज शिक्षित होता है। नारी शिक्षा से न केवल वह शिक्षित होती बल्कि वह अपने अधिकारों के प्रति भी सचेत और सावधान होती है। भविष्य में कोई उसे छल या ठग नहीं सकता। आप स्वयं मुझसे बड़े और विद्वान हैं, अतः मैं केवल आपसे अनुरोध ही कर सकती हूँ कि आप

पुनः एक बार अपने निर्णय पर विचार करें और बहन मंगला को आगे पढ़ने की अनुमति दें। शेष यहाँ सब कुशल है।

चाचीजी को मेरा प्रणाम और बहन मंगला को ढेर सारा प्यार देना।

आपकी भतीजी

पंकजा

प्र. 14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 40 से 50 शब्दों में सूचना तैयार कीजिए। [5]

1. विद्यालय में आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ रखने हेतु समाजसेवा करने का निश्चय किया गया है। जो छात्र हिस्सा लेना चाहते हैं, वे हेड बॉय से संपर्क करें। इस विषय पर सूचना-पत्रक लिखिए।

सूचना

न्यू इरा विद्यालय, नई दिल्ली

20 जनवरी, 20..

आपको सूचित किया जाता है कि विद्यालय द्वारा आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ रखने हेतु समाजसेवा करने का निश्चय किया गया है। 14 से 16 वर्ष की आयु के जो छात्र इस कार्यक्रम में हिस्सा लेना चाहते हो, वे अपना नाम हेड बॉय को 25 जनवरी तक दे सकते हैं। अधिक से अधिक बच्चे कार्यक्रम में भाग लेकर उसे सफल बनाएँ।

हेड बॉय

निर्मल

अथवा

2. आपके विद्यालय द्वारा आयोजित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के लिए सूचना तैयार करें।

सूचना

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम

दिनांक: 2 सितंबर 2015

विद्यालय की समाज परिषद द्वारा सितंबर महीने के प्रत्येक रविवार को प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम विद्यालय के पास वाले लमही गाँव में आयोजित किया जा रहा है।

इच्छुक विद्यार्थी विद्यालय की समाज परिषद में अपना नाम सप्ताह के भीतर पंजीकृत करवा लें।

सचिव

आशीष सिंहल

समाज परिषद

प्र.15. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 50-60 शब्दों में संवाद लिखें।

[5]

1. दूरदर्शन के कार्यक्रमों के विषय में माता और पुत्री के बीच होनेवाला संवाद लिखिए।

माता : आजकल दूरदर्शन पर कार्यक्रमों की होड़ में अच्छे-बुरे का ध्यान नहीं रह गया। मैं तो कहती हूँ - इससे दूर ही अच्छे।

पुत्री : हाँ, माँ ! ऐसा ही है, पर कुछ अच्छे भी हैं।

माता : हो सकता है, पर अधिकांश कार्यक्रम तो ऐसे हैं जिनका न कोई उद्देश्य है और न ही कोई औचित्य।

पुत्री : परंतु कितने ऐसे कार्यक्रम भी आते हैं जो हमारे ज्ञान को बढ़ाते हैं तथा स्वस्थ मनोरंजन भी करते हैं।

माता : मुझे तो अधिकतर फिल्मी कार्यक्रम ही देखने मिलते हैं। इसका नैतिक मूल्यों से कोई संबंध ही नहीं। आज ये विद्यार्थी के पतन का कारण बने हुए हैं।

पुत्री : हाँ, माँ! परंतु अच्छे कार्यक्रमों का चयन कर कुछ समय के लिए देखने में कोई बुराई नहीं।

माता : तुम ठीक कह रही हो, परंतु यह बात याद रखना।

अथवा

2. एक यात्री और टिकिट विक्रेता के बीच हो रहे संवाद लिखिए।

यात्री : नमस्ते।

टिकिट विक्रेता : नमस्ते।

यात्री : क्या मुझे आज रात को जयपुर जाने वाली किसी गाड़ी की दो कन्फर्म टिकिट मिल सकती है?

टिकिट विक्रेता : नहीं सर।

यात्री : कल की मिलेगी?

टिकिट विक्रेता : नहीं सर। आप चाहे तो तत्काल कोटा में कल सुबह आकर देख लेना।


यात्री : तत्काल के दाम तो ज्यादा होंगे न?

टिकिट विक्रेता : हाँ।

यात्री : ठीक है। धन्यवाद।

प्र.16. निम्नलिखित विज्ञापनों में से किसी एक विज्ञापन का आलेख 50 शब्दों में तैयार कीजिए। [5]


1. ठंड के किए प्रयोग किए जानेवाले गरम कपड़ों का विज्ञापन तैयार कीजिए



ठंड से बचना हुआ आसान,
अंजना स्वेटर साथ।
अंजना स्वेटर अपनाओ सालो-साल ठंडी भगाओ

अथवा

2. पेंसिल की बिक्री के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।



पराग पेंसिल
सुंदर, काले अक्षर के
लिए इस्तेमाल करें
पराग पेंसिल